

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर् धीरस् तत्र न मुह्यति ॥१३॥

जैसे इसी जीवन में जीवात्मा बाल, युवा और वृद्ध शरीर प्राप्त करता है, वैसे ही जीवात्मा मृत्यु के बाद दूसरा शरीर प्राप्त करता है. इसलिए धीर मनुष्य को मृत्यु से घबराना नहीं चाहिए. (१५.०८ भी देखें) (२.१३)

Just as the soul acquires a childhood body, a youth body, and an old age body during this life; similarly, the soul acquires another body after death. This should not delude the wise. (2.13)

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोर् अपि दृष्टोऽन्तस् त्व अनयोस् तत्त्वदर्शिभिः ॥१६॥

असत् वस्तु का भाव नहीं होता है और सत् का अभाव नहीं होता है. तत्त्वदर्शी मनुष्य असत् और सत् दोनों को तत्त्व से जानते हैं.

The invisible Spirit (Atma, Atman) is eternal, and the visible physical body, is transitory. The reality of these two is indeed certainly seen by the seers of truth. (2.16)

अविनाशि तु तद् विद्धि येन सर्वम् इदं ततम् ।
विनाशम् अव्ययस्यास्य न कश्चित् कर्तुम् अर्हति ॥१७॥

उस अविनाशी तत्त्व को जानो, जिससे यह सारा जगत व्याप्त है, इस अविनाशी का नाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है.

The Spirit by whom this entire universe is pervaded is indestructible. No one can destroy the imperishable Spirit.

न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥

आत्मा कभी न जन्म लेता है और न मरता ही है. आत्मा का होना फिर न होना नहीं होता है. आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है. शरीर के नाश होने पर इसका नाश नहीं होता. (कठो.उ. २.१८ भी देखें) (२.२०)

The Spirit is neither born nor does it die at any time. It does not come into being, or cease to exist. It is unborn, eternal, permanent, and primeval. The Spirit is not destroyed when the body is destroyed. (2.20)

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य
अन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

जैसे मनुष्य अपने पुराने वस्त्रों को उतारकर दूसरे नये वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीव मृत्यु के बाद अपने पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर प्राप्त करता है. (२.२२)

Just as a person puts on new garments after discarding the old ones; similarly, the living entity or the individual soul acquires new bodies after casting away the old bodies. (2.22)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयम् अदाह्योऽयम् अक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुर् अचलोऽयं सनातनः ॥२४॥

शस्त्र इस आत्मा को काट नहीं सकते, अग्नि इसको जला नहीं सकती, जल इसको गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती; क्योंकि आत्मा अच्छेद्य, अदाह्य, अक्लेद्य और अशोष्य है. आत्मा नित्य, सर्वगत, स्थिर, अचल और सनातन है.

Weapons do not cut this Spirit, fire does not burn it, water does not make it wet, and the wind does not make it dry. The Spirit cannot be cut, burned, wetted, or dried. It is eternal, all pervading, nchanging, immovable, and primeval. (2.23-24)

अव्यक्तोऽयम् अचिन्त्योऽयम् अविकार्योऽयम् उच्यते ।
तस्माद् एवं विदित्वैनं नानुशोचितुम् अर्हसि ॥२५॥

यह आत्मा अव्यक्त, अचिन्त्य और निर्विकार कहा जाता है. अतः आत्मा को ऐसा जानकर तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए. (२.२५)

The Spirit is said to be unexplainable, incomprehensible, and immutable. Knowing the Spirit as such, you should not grieve for the physical body. (2.25)

OM TAT SAT